The Research Dialogue
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-3, Issue-4, January-2025
www.theresearchdialogue.com

"ई–अधिगम की शिक्षा में शिक्षक की भूमिका"

ड़ा0 हरिओम चौहान
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
शिक्षा विभाग,
स्कूल ऑफ एजूकेशन एंड ह्यूमैनिटीज
आईएफटीएम विश्वविद्यालय मुरादाबाद, (यू.पी.)

सारांशः–

ई–अधिगम या ई–शिक्षा का पूरा नाम इलेक्ट्रॉनिक अधिगम (Electronic Learning) है। वास्तव में यह कम्प्यूटर आधारित सीखना है। इस दृष्टि से ई–अधिगम को विभिन्न अर्थों में प्रयुक्त किया जाता है। इस प्रत्यय का सीधा सम्बन्ध प्रगतिशील अधिगम तकनीकी (Advanced Learning Technology) से है। इस दृष्टि से ई–अधिगम में तकनीकी तथा सीखने की नवीन विधियों को सम्मिलित किया जाता है। इसमें कम्प्यूटर नेटवर्क तथा बहुमाध्यम/मल्टीमिडिया तकनीकी का उपयोग किया जाता है। इस दृष्टि से ई–अधिगम शिक्षा का एक नवीन प्रत्यय है, जिसमें परम्परागत अधिगम से बिल्कुल भिन्न प्रकार से सीखना सम्मिलित है। इसमें अधिगम को नए ढंग से सीखने या व्यवस्था करने की रचना की जाती है। ई–अधिगम में सर्वप्रथम हम इण्टरनेट तथा इससे सम्बधित उपकरणों का उपयोग करते हैं और अधिगम के वातावरण को विस्तृत रूप में समझते है। अध्यापक अपने ज्ञान व कौशल का प्रयोग कर इण्टरनेट की सहायता से विद्यार्थियों को अधिगम वातावरण के लिए गम्भीरतापूर्वक विस्तृत रूप से तैयार किया जाता है। ई–अधिगम प्रमुख रूप से विद्यार्थी केन्द्रित होता है, इस दृष्टि से शिक्षा का यह नवीन प्रत्यय बहुत उपयोगी माना जाता है क्योंकि इसमें जीवन पर्यन्त शिक्षा के लिए परिस्थितियाँ तथा वातावरण का निमार्ण होता है। ई–अधिगम से विद्यार्थी अपनी शिक्षा प्रकिया को लम्बे समय तक जारी रखते हैं। शिक्षक आधुनिक उपकरणों के द्वारा शिक्षा को रूचिपूर्ण बना देते हैं जिससे प्रभावित होकर विद्यार्थी अधिगम को बीच से छोड़कर नहीं जाते हैं अर्थात् शिक्षा से पलायन की प्रवृत्ति सदैव के लिए समाप्त हो जाती है। इलेक्ट्रॉनिक्स उपकरणों तथा इण्टरनेट सेवाओं का प्रयोग ई–अधिगम के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों में जैसे–ई–कॉमर्स, ई–बैंकिंग, ई–मेल तथा ई–बुकिंग आदि कार्यों को सम्पादित के लिए होता है, अर्थात् ई. लर्निंग का क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत एवं व्यापक है।

मुख्य शब्दः—प्रगतिशील अधिगम, सुरूचिपूर्ण, टेक्नोलॉजी एनेबल्ड लर्निंग, बहुमाध्यमों, आभासी प्रयोगशाला, इलेक्ट्रॉनिक्स उपकरणों, ऑनलाइन एजूकेशन सिस्टम।

ई—अधिगम का परिचय(Introduction of E-Learning):—ई—अधिगम से तात्पर्य एक ऐसी व्यवस्था से है जिसमें डिजिटल माध्यमों के द्वारा इंटरनेट और प्रौद्योगिकी की सहायता से किया जाने वाला शिक्षण कार्य हैई—अधिगम या ई—शिक्षा उनमें से एक है ई अधिगम का पूरा नाम इलेक्ट्रॉनिक अधिगम (Electronic Learning) है। वास्तव में यह कम्प्यूटर आधारित सीखना है। इस दृष्टि से ई—अधिगम को विभिन्न अर्थों में प्रयुक्त किया जाता है। इस प्रत्यय का सीधा सम्बन्ध प्रगतिशील अधिगम तकनीकी (Advanced Learning Technology) से होता है। ई—लर्निंग शिक्षा और प्रौद्योगिकी का मिश्रण है। इसमें ऑनलाइन कक्षाएँ, वेब आधारित पाठ्यक्रम, वीडियो ट्यूटोरियल, वर्चुअल क्लासरूम और मोबाइल लर्निंग जैसे तत्व शामिल होते हैं। इसके अतिरिक्त इलेक्ट्रॉनिक्स उपकरणों तथा इण्टरनेट सेवाओं का प्रयोग ई—अधिगम का अन्य क्षेत्रों में जैसे—ई—कॉमर्स, ई—बैंकिंग, ई—मेल तथा ई—बुकिंग आदि कार्यों को सम्पादित के लिए होता है, अर्थात् ई. लर्निंग का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक एवं विस्तृत माना जा रहा है। वर्तमान के इस बदलते परिवेश में जीवन के प्रत्येक क्षेत्रों में नये—नये प्रविधियों का प्रयोग हो रहा है। शिक्षा मानव के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। मानव अपने जीवन काल में कई प्रकार के माध्यमों से शिक्षा प्राप्त करता है। इस दृष्टि से ई—अधिगम में तकनीकी तथा सीखने की नवीन विधियों को सम्मिलित किया जाता है।ई—लर्निंग को अन्य नामों से भी जाना जाता है, जैसे—तकनीकि आधारित प्रशिक्षण, कम्प्यूटर आधारित प्रशिक्षण, डिस्ट्रीब्यूट लर्निंग, डिस्टेंस लर्निंग, टेक्नोलॉजी एनेबल्ड लर्निंग तथा आन लाइन लर्निंग आदि। इसमें कम्प्यूटर नेटवर्क तथा बहुमाध्यम/मल्टीमिडिया तकनीकी का उपयोग किया जाता है। इस दृष्टि से ई—अधिगम शिक्षा का एक नवीन प्रत्यय है, जिसमें परम्परागत अधिगम से बिल्कुल भिन्न प्रकार से सीखना सम्मिलित है। इसमें अधिगम को नए ढंग से सीखने या व्यवस्था करने की रचना की जाती है। ई—अधिगम में सर्वप्रथम हम इण्टरनेट तथा इससे सम्बधित उपकरणों का उपयोग करते हैं और अधिगम के वातावरण को विस्तृत रूप में समझते है। इण्टरनेट की सहायता से अध्यापकों तथा विद्यार्थियों को अधिगम वातावरण के लिए गम्भीरतापूर्वक विस्तृत रूप से तैयार किया जाता है। ई—अधिगम प्रमुख रूप से विद्यार्थी केन्द्रित होता है, परन्तु इसके विपरीत परम्परागत शिक्षा में अधिगम अध्यापक केन्द्रित होता है अर्थात ई—अधिगम में पाठ्य—वस्तु के सम्बन्ध में जो कुछ बताया जाता है वह छात्र केन्द्रित होती है। इस दृष्टि से शिक्षा का यह नवीन प्रत्यय बहुत उपयोगी माना जाता है, क्योंकि इसमें जीवन पर्यन्त शिक्षा के लिए परिस्थितियाँ तथा वातावरण का निमार्ण होता है। ई—अधिगम से विद्यार्थी अपनी शिक्षा प्रक्रिया को लम्बे समय तक जारी रखते हैं। वे अधिगम को बीच से छोड़कर नहीं जाते हैं अर्थात् शिक्षा से पलायन की प्रवृत्ति सदैव के लिए समाप्त हो जाती है। ई—अधिगम के द्वारा शिक्षा की प्रक्रिया को सरल व सुरूचिपूर्ण बनाया जाता है, जिसमें छात्र सक्रिय रूप से अध्ययन में भाग लेते हैं।यह एक प्रकार से उन विद्यार्थियों के लिए सतत शिक्षा प्रणाली है जो औपचारिक विधियों द्वारा शिक्षा प्राप्त करने से वंचित हो जाते हैं।सन् 70 के दशक में पर्सनल कम्प्यूटर (PC) CAIतथा CBT का प्रयोग अवश्य प्रारम्भ हो गया था

लेकिन अधिगम व प्रशिक्षण के क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन 'इंटरनेट' के आगमन के साथ माना जा सकता है।

ई–अधिगम की परिभाषा (Definition of E-Learning):–शिक्षाशास्त्रियों तथा शैक्षिक विद्वानों ने ई–अधिगम को निम्नलिखित रूप से परिभाषित किया हैः

- ब्राण्डोल हाल के शब्दों में, "जब अनुदेशन का संचार आंशिक या पूर्ण रूप से विद्युत यंत्रों के माध्यमों की सहातया से तथा वेबसाइट व इण्टरनेट अथवा बहुमाध्यमों सीडी रोम, डी.बी.डी. से किया जाता है। तब उसे ई–अधिगम कहते है।''
- टॉम कैली तथा सिसको के अनुसार, "ई–अधिगम द्वारा अभिसूचना सम्प्रेषण की सहायता से शिक्षा तथा प्रशिक्षण दिया जाता है। प्रशिक्षण की क्रियाओं, छात्र के अधिगम एवं प्रशिक्षण प्रक्रियाओं का उल्लेख नहीं किया जाता है। छात्र की आवश्यकताओं के अनुकूल ज्ञान तथा कौशल उत्तम ढंग से प्रदान किया जाता है ?
- लार्मिन सारक्वाटस के शब्दों में, "ई–अधिगम के उपयोग एवं प्रक्रिया का व्यापक क्षेत्र है, जैसे– वेब आधारित अधिगम, कम्प्यूटर आधारित अधिगम तथा वास्तविक कक्ष शिक्षण को शामिल किया जाए। दृश्य एवं श्रव्य टेप, सैटेलाइड प्रसारण में दूरदर्शन, सी.डी. रोम का उपयोग किया जाता है।"
- रोसनवर्ग के अनुसार, "ई–अधिगम में इण्टरनेट प्रणाली का उपयोग किया जाता है। इण्टरनेट तकनीकी से पाठ्य–वस्तु का संचार किया जाता है जिससे ज्ञान में वृद्धि की जाती है और छात्रों की निष्पत्तियों में वृद्धि होती है।"
- केनेट (Kenet) के शब्दों में, "ई–लर्निंग एक प्रभावशाली शिक्षण अधिगम प्रक्रिया है, जिसकी रचना ई–डिजिटल शिक्षण सामग्री, स्थानीय समुदाय, ट्यूटर तथा वैश्विकी समुदाय की सहायता व सम्पर्क द्वारा संयुक्त रूप से होती है।"

ई–अधिगम के प्रकार(Types of E-Learning):–ई–अधिगम में अनेक प्रकार की प्रविधियों को प्रयुक्त किया जाता है। इसमें बहुमाध्यमों का उपयोग किया जाता है। ई–अधिगम के प्रमुख प्रकार निम्न हैं–

- ऑन–लाइन अधिगम
- मिश्रित अधिगम।
- सिनक्रोनस अधिगम।
- असिनक्रोनस अधिगम।
- स्वाध्याय।
- वेब आधारित अधिगम।
- कम्प्यूटर आधारित अधिगम।

- दृश्य/श्रव्य टेप द्वारा अधिगम।
- ब्लेंडेड लर्निंग।
- मोबाइल लर्निंग।

ई–अधिगम की विशेषताएँ (Characteristics of E-Learning):– वर्तमान परिपेक्ष्य में देखा जाये तो ई–अधिगम की अनेक विशेषताओं को इंगित किया जा सकता है किन्तु उनमें से प्रमुख निम्न हैः

- आर्थिक रूप से निर्बल तथा देश के सूदूर रहने वाले विद्यार्थियों के लिए यह प्रणाली बहुत उपयोगी है।
- सेवारत होने पर भी युवक या विद्यार्थी ऑनलाइन कोर्स करके अपनी योग्यता की वृद्धि कर सकते हैं। इससे शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात् सेवा या कार्य के क्षेत्र में अपने आपको योग्य, सूक्ष्म तथा कुशल (Up-to-date) रखना सरल हो जाता है। इसमें विद्यार्थियों के लिए सबसे बड़ी सुविधा यह है कि वे जब चाहें और जहॉं चाहें स्टडी–मैटीरियल को पढ़ सकते हैं। इण्टरनेट पर अध्ययन सामग्री सदैव उपलब्ध रहती है।
- ऑनलाइन एजूकेशन के माध्यम से युवक या छात्र देश–विदेश के किसी भी विश्वविद्यालय से घर बैठे कोई भी कोर्स का अध्ययन कर सकते हैं। इसके लिए पंजीकृत प्राविधि या ढंग (Registration process) भी ऑनलाइन ही होती है। पिछले 2 वर्ष (कोरोना काल) में सभी शिक्षण संस्थानों ने कक्षाओं के साथ परीक्षाएँ भी ऑनलाइन कराई थी।
- ऑनलाइन एजूकेशन सिस्टम (Online Education System) में अनेक तकनीको का उपयोग किया जाता है, जैसे ई–मेल, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग, ब्लॉग्स, बुलेटिन बोस, डिस्कशनबोर्ड्स आदि।
- ऑनलाइन शिक्षा में ग्राफिक्स, एनिमेशन, मल्टीमीडिया आदि के उपयोग से पाठ्यक्रम, स्टर्डी मेटेरियल (Course&content) को आयु वर्ग के अनुसार काफी रोचक तथा प्रभावकारी बनाया जा सकता है।
- आजकल आभासी प्रयोगशाला (Virtual lab) के माध्यम से घर बैठे प्रयोगात्मक कार्य (Practical) भी किए जा सकते हैं।
- ई–अधिगम के द्वारा प्रमाण पत्र से लेकर उच्च डिग्री तक के विभिन्न कोर्स ऑनलाइन उपलब्ध रहते हैं।
- ई–लर्निंग के अन्तर्गत, अधिगम उद्देश्य से विभिन्न स्रोतों द्वारा सामग्री या पाठ्यवस्तु को विभिन्न संचार प्रणालियों के माध्यम से वितरित किया जाता है।
- ई–लर्निंग एक प्रगतिशील प्रत्यय है, इसमें नित नये आयाम सृजन होते रहते हैंय जैसे– मोबाइल लर्निंग

- ई–लर्निंग समकालिक या असमकालिक हो सकती है, अर्थात् इसे कई रूपों में प्रयोग किया जा सकता है।
- ई–लर्निंग को दूरवर्ती शिक्षा के समतुल्य नहीं देखना चाहिए, दोनों के प्रत्ययों में कुछ समानता तथा असमानताएँ हैं।
- कम्प्यूटर सहाय अनुदेशन, कम्प्यूटर प्रबन्धित अनुदेशन तथा मल्टीमिडिया आदि को ई–लर्निंग का दर्जा तब तक नहीं दिया जा सकता जब तक ई–सेवाओं का प्रयोग कर उन्हें शिक्षण अधिगम में प्रयुक्त न किया जाए।
- ई–लर्निंग के लिए अध्यापक तथा छात्रों को उच्च तकनीकी का ज्ञान होना परम आवश्यक है।
- ई–लर्निंग बिना बिजली एवं ऊर्जा के साधन के बिना निष्क्रिय हो जाती है।
- ई– लर्निंग इण्टरनेट सेवाओं तथा वेब सुविधाओं के बिना सम्भव नहीं है।
- ई–लर्निंग में इलेक्ट्रॉनिक्स ही (ई) उपकरणोंय जैसे–कम्प्यूटर, सी. डी. रोम, दृश्य–श्रव्य उपकरणों, मल्टीमीडिया आदि का प्रयोग किया जाता है।
- ई–अधिगम में छात्रों को अपनी गति से सीखने का अवसर दिया जाता है। इसे आम भाषा में स्वाध्याय भी कह सकते है।

ई–लर्निंग की शिक्षा में शिक्षक की भूमिका (Role of Teacher in E- Learning):–प्राचीन काल से ही शिक्षक को समाज या राष्ट् का निर्माता माना जाता है किन्तु आज के तकनीकि युग में भी उसकी भूमिका में किसी भी प्रकार की कमी नहीं आयी है। आज के कम्प्यूटर युग में शिक्षक की भूमिका को निम्नलिखित बिन्दुओं के द्वारा समझा जा सकता है:

- **मार्गदर्शक(Facilitator):–** पारम्परिक अधिगम प्रणाली में शिक्षण सामग्री पाठ के रूप में होती है लेकिन ई–लर्निंग सामग्री में पाठ के साथ–साथ श्रव्य–दृश्य सामग्री भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध कराई जाती हैं। जिसका शिक्षक बच्चों को सही डिजिटल संसाधनों एवं सामग्री का चयन आदि करने में मार्गदर्शन करता है।वह ऑन लाइन पाठ्यक्रमों और अध्ययन सामग्री को इस प्रकार प्रस्तुत करता है कि छात्र उसे आसानी से समझ सकें। अधिगमकर्ता के स्तर और प्रगति के आधार पर सामग्री का अनुकूलन और आपूर्ति की जाती है।
- **तकनीकी सहयोग कर्ता के रूप में(As a Technical Suppot):–**ई–अधिगम में अनेक ऐसे डिजिटल उपकरणों, ऑनलाइन साइटस एवं प्लेटफार्म का उपयोग किया जाता है जिसका शिक्षक को तकनीकि में पारंगत होना आवश्यक है ताकि वह तकनीकि समस्याओं को हल करके उनको सही दिशा में मार्गदर्शन कर सके।

- **प्रेरितकारक के रूप में(As a Motivator):–** इस प्रकार की शिक्षा में छात्रों को स्व–प्रेरित रहना होता है। शिक्षक का यह दायित्व है कि उनकी जिज्ञासा को बनाए रखे और इंटरैक्टिव सेशन्स, वीडियो लेक्चर्स और चर्चा मंचों के माध्यम से संवाद के प्रति छात्रों को उत्साहित करें।
- **व्यक्तिगत मार्गदर्शन(Personalized Learning):–** मनोविज्ञान के द्वारा यह ज्ञात हो चुका है कि प्रत्येक व्यक्ति की सीखने और समझने गति अलग–अलग होती है। शिक्षक को छात्र की आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षा प्रदान करें, शिक्षक को प्रत्येक छात्र के प्रति अनुकूलित शिक्षण (Adaptive Learning) प्रदान करना चाहिए।
- **नैतिकता और अनुशासन सिखाने वाला(Learner of Morality and Discipline):–**प्रत्येक अधिगम कर्ता का यह नैतिक कर्तव्य है कि वह अपने ई अधिगम में नैतिकता और डिजिटल अनुशासन का पालन करे। शिक्षक को समय–समय पर यह ध्यान रखना चाहिए कि उसके विद्यार्थी उचित संसाधनों का उपयोग कर रहे या नहीं।
- **उच्च स्तर के सामग्री निर्माता(High-level Content Creators):–**इस प्रकार के अधिगम में शिक्षक को उच्च गुणवत्ता वाली डिजिटल सामग्री जैसे वीडियो लेक्चर्स, पीडीएफ, नोट्स, प्रेजेंटेशन और इंटरेक्टिव क्लास तैयार करे।
- **समस्या समाधानकर्ता (Resolves the Problems):–**ऑनलाइन शिक्षा में कई बार छात्रों को विभिन्न प्रकार की शैक्षणिक और तकनीकि समस्यओं का सामना करना पड़ता है। शिक्षक का यह दायित्व है कि छात्रों की समस्याओं को हल करने में सहायत करें ताकि उनके सीखने की गति में वृद्वि हो सके।
- **मूल्यांकन कर्ता के रूप में(As an Evaluator):–**शिक्षक छात्रों की ऑनलाइन परीक्षाओं, असाइनमेंटस और क्विज में माध्यम से उनका मूल्यांकन करता है। वह उनकों फीडबैक देकर उनके कार्य में सुधार के प्रति प्रेरित करता है।

ई–लर्निंग के लाभ (Advantage of E- Learning):–शिक्षा के द्वारा व्यक्ति का सर्वागीण होता है। यह बालक को इस भौतिकवादी युग में योग्य मानव बनाने का कार्य करती है, इसके द्वारा छात्र अपने आस–पास के शिक्षक के अतिरिक्त राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के शिक्षण सामग्री को सुन व देख सकते हैं। आज के डिजिटल युग में ई–लर्निंग के कई लाभों को देखा जा सकता है:

(1)आज शैक्षणिक पद्धतियाँ दिन–प्रतिदिन महँगी होती जा रही हैं। वहीं डिजिटल एवं इलेक्ट्रॉनिक बाजार में उत्पादों के दाम कम होते जा रहे हैं। इस कारण भी ई–लर्निंग काफी किफायती है, पारम्परिक शैक्षणिक विधियों के मुकाबले ई–लर्निंग 30से 40प्रतिशत सस्ती है। जैसे–जैसे तकनीकी विकास होता जा रहा है इसका लाभ ई–लर्निंग को मिलता जा रहा है।

(2)इसके माध्यम से विविध पाठ्यक्रमों की उपलब्धता होती है। शिक्षा ग्रहण करने वालों के लिए ई–लर्निंग में सर्टिफिकेट कोर्स, डिप्लोमा, डिग्री, कन्टीन्यूइंग एजूकेशन, वोकेशनल कोर्सेस जैसे कई पर्याय उपलब्ध हैं।

(3) सुगम और सुलभ ई–लर्निंग के लिए न तो किसी कक्षा की आवश्यकता होती है और न किसी समय–सारिणी की। इसलिए ई–लर्निंग को 'कहीं भी और कभी भी' लर्निंग कहते हैं क्योंकि विद्यार्थी पीसी, लैपटॉप और इण्टरनेट कनेक्शन के साथ कहीं भी सीख सकता है।

(4) ई–लर्निंग में कोलाब्रेटिव लर्निंग को प्रधानता दी जाती । इसके अन्तर्गत कई तरह के टूल्स उपलब्ध होते हैं– जैसे– डिस्कशन बोर्ड, चेट, एलवीसी, ब्रेक आउट सेशंस। इनमें शिक्षक, मार्गदर्शक, समूह वार्तालाप से एक–दूसरे से लाभान्वित होते हैं।

(5) हायर रिटेन्शन ई–लर्निंग में उपलब्ध टूल्स विद्यार्थियों में सीखने की रुचि का विकास करते हैं। सर्वोत्तम ट्रेनर, कोलाब्रेटिव लर्निंग, अपने अनुरूप सीखने की सुविधा, फीडबैक तथा शंका समाधान जैसी विशेषताओं के कारण ई–लर्निंग के द्वारा हायर रिटेन्शन होता है।

(6) ई–लर्निंग समाज के पिछड़े वर्ग और शारीरिक रूप से अक्षमों के लिए वरदान है। सिर्फ क्लास रूम में बैठकर सीखने की आवश्यकता नहीं होने से ई–लर्निंग दूरस्थ क्षेत्रों के लोगों एवं अन्य पिछड़े वर्ग के लोगों के लिए वरदान है। आम व्यक्ति एवं कमजोर वर्ग स्थापित शिक्षा व्यवस्था को महँगी एवं कठिन महसूस करता है। इसके मुकाबले ई–लर्निंग सरल, सुलभ, किफायती एवं उनके विकास में सहायक है।

(7) ई–लर्निंग के माध्यम से किसी भी विषय के विशेषज्ञ का राज्य, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मार्गदर्शन उपलब्ध हो जाता हैं। अन्य पारम्परिक शिक्षण के तौर–तरीकों में सिर्फ एक स्थान पर ही उपलब्ध व्यक्ति विशेष का ही मार्गदर्शन मिलता है, जबकि ई–लर्निंग द्वारा सर्वश्रेष्ठ विशेषज्ञ का वीडियो रिकार्डिंग, लाइव क्लासेस द्वारा मार्गदर्शन ले सकते हैं।

ई–लर्निंग की सीमाएँ (Limitations of E- Learning)

(1) ई–लर्निंग को प्रयोग में लाने के लिए शिक्षकों तथा शिक्षार्थियों को प्रशिक्षित करने की आवश्यकता होती है। विद्यालय प्रशासन, यहाँ तक कि शिक्षकों में भी इसके लिए पर्याप्त उत्साह देखने नहीं मिलता, वे परम्परागत शिक्षण से हटकर कुछ करने में रुचि नहीं लेते, इसे भार समझते हैं।

(2) ई–लर्निंग में छात्रों में सामाजिक मेलजोल या मानवीय सम्बन्धों की सांवेगिक विशेषताओं का सर्वथा अभाव रहता है। इसके अभाव में ई–लर्निंग की प्रभावशीलता कम हो जाती है।

(3)ई—लर्निंग में विद्यार्थियों तथा शिक्षकों को मल्टीमीडिया, कम्प्यूटर इण्टरनेट तथा वेब टेक्नोलॉजी के प्रयोग में दक्ष होना चाहिए। इसके अभाव ई—लर्निंग सम्भव ही नहीं है।

(4)ई—लर्निंग के लिए मल्टीमीडिया, कम्प्यूटर तथा वेब सुविधा शिक्षक तथा शिक्षार्थी दोनों के पास होना आवश्यक है, ऐसे उपकरण अत्यधिक महँगा होने के कारण ये सभी के पास उपलब्ध होना सम्भव नहीं है। हमारे विद्यालयों में भी इनकी पर्याप्त व्यवस्था न होने से ई—लर्निंग को प्रयोग में लाने में अनेक कठिनाइयाँ आती हैं।

(5) विद्यार्थियों, शिक्षकों, अभिभावकों तथा समाज के अन्य वर्गों में भी प्रायः ई—लर्निंग के प्रति सकारात्मक दृ ष्टिकोण का प्रायः अभाव पाया जाता है। इस प्रकार का नकारात्मक तथा उपेक्षित दृष्टिकोण से ई—लर्निंग को परम्परागत शिक्षण का एक विकल्प बनाने में बाधा उत्पन्न हो रही है।

ई—अधिगम में शिक्षक के लिए चुनौतियॉं और उनका समाधान

चुनौती	समाधान
डिजिटल उपकरणों की कमी	सरकार और संस्थानों के द्वारा डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता में लगातार वृद्धि की जा रही है।
शिक्षक प्रशिक्षण की कमी	शिक्षकों को लगातार राज्य सरकार, केन्द्र सरकार, निजि शिक्षण संस्थान और एनजीओं आदि उच्च कोटि के नियमित ई—लर्निंग वर्कशाप और प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान कर रहे हैं।
छात्रों का ध्यानाकर्षणकी समस्या	छात्रों का ध्यानाकर्षण करने के लिए इटरेक्टिव सामग्री, गेमिफिकशन और संवादात्मक शिक्षण तकनीकों का उपयोग किया जा रहा है।
मूल्यांकन की समस्या	ई—लर्निंग शिक्षण में छात्रों को ऑनलाइन क्विज, असाइनमेंट और प्रोजेक्ट—बेस्ड़ लर्निंग को बढ़ावा दिया जा रहा है।

निष्कर्षः— ई—अधिगम ने शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारने और सीखने की प्रक्रिया को अधिक सुलभ बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। शिक्षक की भूमिक अब केवल ज्ञान देने तक सीमित नहीं है, बल्कि अब शिक्षक गाइड, मोटिवेटर, समस्या समाधान कर्ता, उच्च कोटि का सामग्री निर्माता, तकनीकी सहयोग कर्ता अनुशासन सिखाने वाला, व्यक्तिगत सलाहकार और मूल्यांकन कर्ता आदि प्रकार के कार्य बड़ी ईमानदारी से पूरा कर रहा है। आज के डिजिटल युग में शिक्षकों को अपने ज्ञान और कौशल में वृद्धि करना परम आवश्यक है।

उनकों नई तकनीकिव कौशलों को अपनाकर अपनी भूमिका को और अधिक प्रभावी बनाना होगा ताकि शिक्षक छात्रों को सर्वश्रेष्ठ शिक्षा प्रदान कर अपना, समाज व देश का कल्याण करने में सहायता करें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

Harasim, L. (2017). *Learning Theory and Online Technologies*

Tobin, J.T., Mandernach, J. & Taylor, A.H. (2015). *Evaluating Online Teaching*

Budhair, S.S. & Skipwith, K. (2017). Best Practices in Engaging Online Learners Through Active and Experiential Learning Strategies

https://sarkariguider.in/e-learning-in-hindi/

https://targetnotes.com/%E0%A4%88

https://chatgpt.com/c/67beb5d0-8690-8013-b4f7-1c107a3d3226

THE RESEARCH DIALOGUE
DIALOGUE
Manifestation Of Perfection

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed /Refereed National Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-3, Issue-4, January -2025
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number Jon.-2025/25
Impact Factor (RPRI-4.73)
https://doi-ds.org/doilink/01.2023-11922556

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

ड़ा0 हरिओम चौहान

for publication of research paper title

"ई–अधिगम की शिक्षा में शिक्षक की भूमिका"

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and

E-ISSN: 2583-438X, Volume-03, Issue-04, Month January, Year-2025.

Dr. Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com

INDEXED BY